दिनांक 20 अगस्त, 2010 को नई दिल्ली में आयोजित राजीव गाँधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार वितरण समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्बोधन।

——————————

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ आयोजित राजीव गाँधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार वितरण समारोह में आप सबके बीच आने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। यह मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे श्री राजीव गाँधी की माताश्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी जी के साथ कार्य करने का अवसर

मिला। इसी दौरान मुझे राजीव गाँधी जी से भी भेंट करने का मौका मिलता रहा है।

हमारा देश ऋषि–मुनियों का देश रहा है। यहाँ असंख्य महापुरूषों ने जन्म लेकर पीड़ित और शोषित मानवता के कल्याण हेतु प्रेम–एकता, वसुधैव कुटुम्बकम तथा धर्म–निरपेक्षता का पावन सन्देश दिया है। हमारी भारतीय संस्कृति की जड़े आध्यात्म के मूल से निकली है और आस्था एवं दूरदर्शिता के बीज से उगकर पुष्पित एवं पल्लवित हुई है। विश्व की अनेक संस्कृतियों ने हमसे सीखा और हमें आत्मसात किया है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता अनेकता में एकता तथा विभिन्नता में एकरूपता की द्योतक रही है। हमारी संस्कृति के

आदर्श मानवीय मूल्यों का ही यह नतीजा है कि युगों से भारत में अनेक धर्मावलम्बियों ने इसे अपनाया और अपनी संस्कृति को इसमें समाहित किया। यही कारण है कि भारत की गंगा–जमुनी संस्कृति सदियों से विश्व विख्यात रही है।

भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता की गौरव गाथा का उल्लेख करते हुए प्रसिद्ध विदेशी इतिहासकार विसेंट स्मिथ ने लिखा है कि ––''निःसन्देह भारत की एक गहरी आधारभूत एकता है, जो रक्त, रंग, भाषा, वेशभूषा, आचार–व्यवहार अथवा पंथ जैसी असंख्य विविधताओं से ऊपर उठी हुई है।''

धर्म वस्तुतः भगवान और मानव के बीच आस्था, विश्वास और श्रद्धा से परिपूर्ण रिश्ते को सुदृढ़ बनाये रखने का एक सशक्त माध्यम है। भगवान, गॉड, खुदा और वाहे गुरू तक पहुँचने का एक ही मार्ग है, वह है सत्यपथ।

हमारे देश में मध्य कालीन युग में धर्म–निरपेक्षता, सर्वधर्म समभाव और राष्ट्रीय एकता की भावना इतनी प्रबल थी कि अमीर खुसरों, रहीम, रसखान और जायसी जैसे अनेक मुस्लिम कवियों ने हिन्दू देवी–देवताओं का गुणगान किया। प्रेम, एकता, शांति, सद्भाव पर जोर देने वाले कवियों में महाकवि तुलसीदास का भी विशेष योगदान है। उन्होंने कहा है कि––

“पर हित सरिस धरम् नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।”

यह सच है कि धर्म करूणा, दया, उपकार, सह–अस्तित्व और सहिष्णुता की भावना को मजबूत करता है। हम सभी लोग जानते हैं कि बापू को कुछ भजन बहुत प्रिय थे। जरूर कुछ उन भजनों में विशेषता होगी या कोई सन्देश होगा। महात्मा गाँधी को

“वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ परायी जाणे रे
पर दुख्खे उपकार करे तोये
मन अभिमान ना आणे रे।”

तो बहुत ही प्रिय था। शायद इसके पीछे इंसानियत के लिये एक पैगाम है कि भगवान, ईश्वर जैसे नाम कितने ही अलग–अलग हों मगर वह उसी परमात्मा का नाम है, जो पूरे विश्व का सृष्टिकर्ता है। रास्ते देखने में चाहे जितने अलग हों मगर अन्त में मंजिल एक ही होगी। ऐसा मेरा मानना है।

धर्म की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि –''मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति दोनो की ही शिक्षा दी। हम लोग सब धर्म के प्रति केवल सहिष्णुता में ही

विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मो को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं।''

ज्ञान तथा विज्ञान के बल पर मनुष्य ने वैश्विक तथा ब्रह्मांडीय स्तर पर भौतिक दूरियाँ समाप्त कर ली हैं। परन्तु मानव–मानव के बीच सद्भाव और मैत्री–सेतु के निर्माण के लिए पर्याप्त प्रयास अभी नहीं हो पायें हैं। यही कारण है कि विकास एकांगी होकर रह गया है और विज्ञान में अतुलनीय प्रगति के उपरान्त भी मानव जीवन पीड़ा व चिन्ताओं से मुक्त नहीं हो पाया है। इसका मूल कारण संकुचित मानसिकता व सीमित दृष्टिकोण है। इसलिए सदा स्मरण रखें कि

व्यापक मानसिकता व उदार दृष्टिकोण से ही मनुष्य को मनुष्य से जोड़ा जा सकेगा।

संसार के सभी धर्म महान हैं। दुनिया का कोई भी धर्म ऐसा नहीं है, जो लोगों को नफ़रत या झगड़ा करने की शिक्षा देता हो। मन्दिर, मजिस्द, गिरजाघर, गुरूद्वारे तथा अन्य धार्मिक स्थल हमारे हैं और सभी धर्म स्थल शांति और अमन के घर हैं। सभी को सभी धर्मो का मान–सम्मान और आदर करना चाहिए। तभी मानव–प्रेम, साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी तथा देश एवं प्रदेश विकास के पथ पर अग्रसर होगा।

मैं अल्लामा इकबाल के इस शेर से अपनी बात समाप्त करता हूँ–

‘मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,
हिन्दी है हम वतन है, हिन्दोस्तान हमारा।’’

धन्यवाद। नमस्कार।